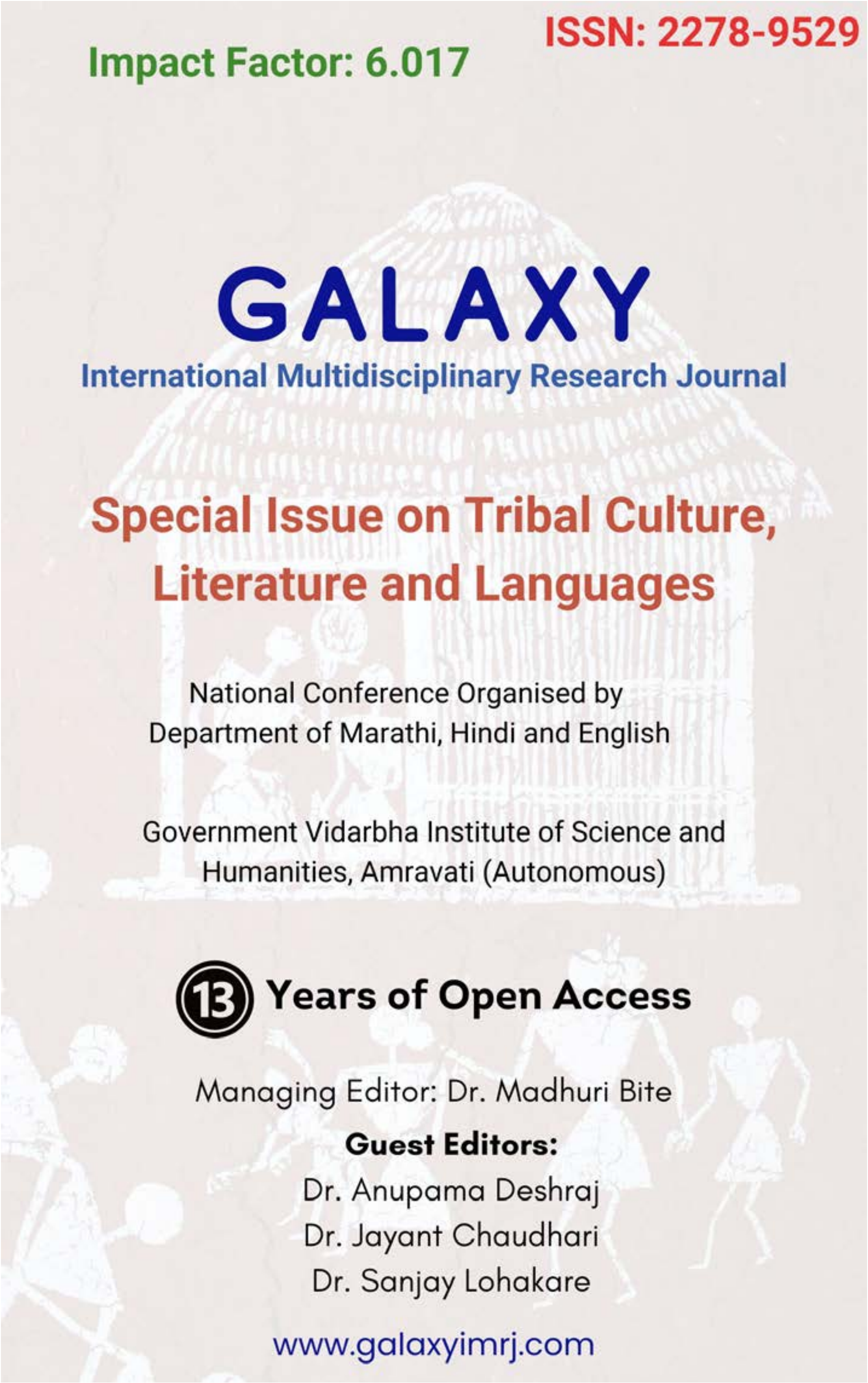

About Us: http://www.galaxyimrj.com/about-us/
Archive: http://www.galaxyimrj.com/archive/
Contact Us: http://www.galaxyimrj.com/contact-us/
Editorial Board: http://www.galaxyimrj.com/editorial-board/
Submission: http://www.galaxyimrj.com/submission/
FAQ: http://www.galaxyimrj.com/faq/

"आदिवासी 'महादेव कोळी' समाज के त्योंहारों में गाए जाने वाले लोकगीतों में नारी भावनाओं का अध्ययन"

जाधव अलका [1] खांडेकर सजित [2]

शोधार्थी, हिंदी विभाग, प्रोफे सर रामकृ ष्ण मोरे कला वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, आकु र्डी - पुणे

विभागप्रमुख, हिंदी विभाग, राजमाता जिजाऊ शिक्षा प्रसारक मंडल के कला वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय भोसरी पुणे.

सारांश:

भारत के विभिन्न आदिवासी समाजों में लोकगीतों का महत्वपूर्ण स्थान है। ये लोकगीत न केवल उनकी सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा हैं, बल्कि उनके समाज की जीवनशैली, परंपराओं और भावनाओं को भी दर्शाते हैं। इस शोध का मुख्य उद्देश्य आदिवासी महादेव कोळी समाज के त्योहारों में गाए जाने वाले लोकगीतों में स्त्री भावनाओं का विश्लेषण करना है।

महादेव कोळी समाज की स्त्रियाँ अपने लोकगीतों के माध्यम से अपनी भावनाओं, संघर्षों, और आशाओं को व्यक्त करती हैं। इन गीतों का अध्ययन करके उनके सामाजिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक पहलुओं को समझना महत्वपूर्ण है।

इस अध्ययन में नृवंशविज्ञान (Ethnography) और गुणात्मक विश्लेषण (Qualitative Analysis) की विधियों का उपयोग किया गया है। अकोले तहसिल में स्थित आदिवासी महादेव कोळी समाज के विभिन्न त्योहारों के दौरान गाए जाने वाले लोकगीतों को संग्रहित किया गया और उनका विश्लेषण किया गया है।

बीज शब्द: आदिवासी, महादेव कोळी, लोकगीत, त्योहार,

प्रस्तावना

आदिवासी महादेव कोली समुदाय के त्योंहारों में गाए जानेवाले लोकगीत व्यक्ति एवं समाज की संस्कृति का प्रतिबिंब होते हैं। जो स्थानिय आख्यान, बोली भाषा के माध्यम से मानव संस्कृति और उनकी जीवनशैली को अवगत करातें हैं। यह एक मौखिक परंपरा है जो पीढ़ियों से चली आ रही हैं। लोकगीत विशेषकर जनजाति एवं समाजों में अत्यंत समृद्ध और लोकप्रिय हैं। और इस मौखिक परंपरा को सरंक्षित करने और प्रचारित करने को महत्त्व देते हैं।

स्त्री और पुरुष समाज के दो आधारस्तंभ है। किंतु आज भी महिलाओं की उपेक्षा की जाती है। 'समाज में स्त्रियों की दयनीय दशा है। जिसका प्रमाण और प्रकाशन, लोकगीतों में नारी ने समय -समय पर स्वयं किया हैं।

कोई भी स्त्री सामाजिक स्तर पर एंव परिवार में अपना जीवन व्यतित करते समय कई सारी भूमिकाएँ अदा करती हैं। एक ही समय वह माता, बहना, बेटी, पत्नी , ननद , भाभी, देवरानी, जेठानी और साथ ही , समाज का एक अंग ऐसे विभिन्न रूपों में सहज बर्ताव कर सकती है। हर एक स्त्री के मन की ये भूमिकायें समय -समय पर विभिन्न गीतों में पिरोयी गई हैं। जो की स्त्री के मन, की भावनाओं का विश्लेषण कराती हैं।

आदिवासी महादेव कोली लोकगीत और स्त्री भावनायें

आदिवासी महादेव कोली समाज में ऐसे ही कई सारे गीत त्योंहारों के समय गाए जातें हैं। जिन्हें लोकगीतों के नाम से जाना जाता है। यह लोकगीत स्त्री के मन की भाव - भावनाओं का वर्णन करते हैं। यह गीत नागपंचमी, होली, दीवाली, रक्षाबंधन, नवरात्रि जैसे त्योंहारों में गाए जाते हैं।

नागपंचमी इस त्योंहार के शुभ पर्व पर अपनी बेटी के प्रति माँ का उमड़ता हुआ प्यार दिखाते हुए उसे माइके लाने हेतु माँ घर मे हर एक से पूछती है ,ससुराल से सई को

लाने हेतु कौन जा रहा है । सब की सहमति से सई के बंधू कान्हा को भेजने की तैयारी की जाती है । जो की गाने में स्त्री का अपनी बेटी के प्रति प्यार , लगाव और स्नेह को दिखाता है ।

'साल के बाद आया पंचमी का त्योहार,

सई को मायके लाने को कौन है तैयार'

जायेगा सई का बंधू कान्हा

सब घोड़ी उसकी सजाना

सई के ससुराल में सई को लाने हेतु उसका भाई पहुँचता है। लेकिन सई आने के लिए तैयार नहीं है क्यूँकि वह बंधन में बंधी हुईं है और अपने भाई से घरवालों की अनुमति मांगने हेतु कहती है । जो की स्त्री की विवशता , आज्ञाकारिता और बंदिस्त जीवन को प्रकट करता है ।

सुनो सुनो ससुरजी , सईबाई को पंचमी को भेजो

अरे अरे कान्हा, उसकी सासु मा से तुम पूछो

सुनो सुनो जी सईबाई की सासुमां , सईबाई को पंचमी को भेजो

अरे अरे कान्हा, उसके पतिदेव से तुम पूछो

सुनो सुनो जीजाजी , मेरी बहना को पंचमी को भेजो

लेकर जाना, लेकर जल्दी लाना , चावल लगाने का है मौसम आया (खोकले, २०२२)

माँ बेटी का प्यार, बेटी ने माँ से हट जताते हुए प्रकट होता है । एंव ननंद भाभी की नोकझोक, तक्रार प्रकट करते हुए दिखाई देते हैं ।

माँ मुझे कुछ पहनने को देदो, माँ मुझे कुछ पहनने को देदो

अपनी भाभी की साड़ी लेलो, अपनी भाभी की साड़ी लेलो

भाभी मुझे साड़ी देदो, भाभी मुझे साड़ी देदो

अपनी माँ से ही लेलो , अपनी माँ से ही लेलो

माँ बेटी के बीच का प्यार और ननंद भाभी के संबंध को दर्शाता है । साथ ही भाभी- ननंद के नोकझोक के बाद भाई का बदला हुआ रवैया ,भाभी और भाई का नाराज हो जाना ,और फिर बहना को वापिस ससुराल भेजने की तैयारी में लग जाना, ननंद की वेदना और भाभी की इर्षा की अनुभूति को दर्शाता है ।

तभी बेटी आर्तता से अपने माँ से कुछ मांगती है जो की ससुराल में उसकी इज्जत और मायके का रौब बढ़ाने की कोशिश को दिखाता हैं । साथ ही में मायके में बदले भाई के नजरियों को ध्यान में लेते हुए वह मायके की राह बंद होने का मन ही मन दुःख व्यक्त करती है । स्त्री की ससुराल में माईके का बढ़पन बढ़ानेकी कोशिश और माईके की उसके प्रति नाराजगी का भाग इस पंक्तियों मे स्त्री की उद्विग्नता को दर्शाता है।

सुनो, सुनो रे मेरी माँ, नयी साड़ी लेकर देना

अब वापस नहीं है आना

सुनो, सुनो रे मेरी माँ, नए कंगन लेकर देना

अब वापस नहीं है आना

भाई मेरा बन गया बैरी

कमर में उसके लटकती छुरी

गौरी के त्यौहार के गाने में पति -पत्नी के वियोग को दिखाते हुए आदिवासी गीतों मे कहा गया है,

महादेव गए है बन में

पार्वती अकेली राह देखती है घर में (गारे, १९७४ पृ।२८२)

हर पतिव्रता स्त्री को अपने ससुराल और पति के प्रति प्यार और सम्मान की भावना रहती है। यही भावनाओं को प्रकट करते हुए स्त्री गाने में बोलती है की,

सेबंती का फूल खिला है माली के खेती में ,
नाग देव बैठे हे काली मैना के जाली में
नवरत्नों का हार सासु माँ के गले में
सासूमाँ की कोख से पैदा हुआ पति मेरा हिरा
सुसुरजी के पगड़िका जो बन बैठा (कलगी) तुरा (गारे, १९७४ पृ। २८२)

आदिवासी स्त्री को अपने घर के प्रति भी बहुत प्यार और लगाव रहता है जिसके कारणवश गाने में वह उसका वर्णन अलग अलग त्योंहारों में करती है।

बड़ा मेरा मकान , आने - जानेवालों को नमन
आँगन में मटके का पानी , ऊपर जाली का मंडप
बड़ा मेरा घर इसकी बड़ी बड़ी है दीवारे
खड़ी हुइ है वह मेरे पति के सहारे (धराड़े और धिंदले, २०२३)

नयी पीढ़ी के साथ अब कुछ नए गीत भी गाए जाने लगे है। जो समाज में विवेकपूर्ण क्रांति लाने का काम करते है । स्त्री भ्रूण हत्या रोकने हेतु एंव समाज में जनजागृति करने हेतु माँ के पेट पनपनेवाली बच्ची के भावनाओं को प्रकट करते हुए समाज को आईना दिखाते प्रश्न रखती है ।

माँ- बाबा मुझे जन्म लेने दो,
मुझे भी ये दुनिया देखने दो
लडका ही क्या दिप है बंश का?
मैं भी सहारा बनूँगी बुढापे का (धराड़े और धिंदले, २०२३)

स्त्री को ससुराल में होने वाले पीड़ा को सामने रखने हेतु एवं सहने हेतु एक स्त्री अपने सहेलियों को गीतों से समझाती है की,

सीता को ससुराल में पीड़ा हुई बहु, बहु
सीताने बाटें सहेलियों में गेहूँ, गेहूँ
सीता को ससुराल में तकलीफ हुई पल पल
सीताने पीड़ा बाटके दी घर घर (लोहकरे, २००६)

बहन भाई के प्यार को दिखाने हेतु स्त्री देवी माँ की आराधना करती है। और अपने भाई को बेटा पैदा हो ऐसी मन्नत मांगते हुए गाती है की ,

माँ घोरपड़ाई मैं आयी तुझे मिलने को
एक पुत्र देदे मेरे भाई को (लोहकरे, २००६)

संशोधन परिणाम एंव चर्चा:

सारांश में कहा जाये तो आदिवासी महादेव कोली समुदाय के स्त्री केंद्रित गीत, नारी के मन में उमड़नी वाली भावनाओं को दर्शाते है। इन में अधिकतम गीत उत्सव और त्योंहारोंपर रिश्ते, उनकी तकरार, नोकझोक और प्यार को दर्शाते है। साथहि मे स्त्री मन की भावनाये प्यार, दुलार, विवशता, सहनीयता, समजदारी को भी बया करते है। साथ ही में संस्कृति और सभ्यता को बनाये रखनेका काम करती है।

(टिपणी: शोधालेख के लिए इकट्ठा की जानकारी आदिवासी महादेव कोली समाज के व्यक्तियोंके साथ की चर्चा से मिली हुई है और इसका प्रचलित भाषा के साथ संबंध खोजा गया है। इसी कारणवश संदर्भ संख्या कम है।)

1. गारे गोविंद : महाराष्ट्र के आदिवासी : महादेवता कोली।, आदिम साहित्य प्रकाशन , खडकी, (१९७४), आवृत्ती ४ थी (२०१९) पुणे. पृ। ३, २७६ , २८२ ,
2. गारे गोविंद :महाराष्ट्रातील आदिवासी जमाती (सामाजिक व सांस्कृतिक मागोवा) , कॉन्टिनेन्टलप्रकाशन, विजयनगर, पुणे -३०, पृ। १
3. गुप्ता रमणिका: आदिवासी विकास से विस्थापन, राधाकृष्णन प्रकाशन, नई दिल्ली, २०१८ , पृ। १२
4. जाधव अलका और खांडेकर सजि: “स्वतंत्र भारत में महाराष्ट्र के साहित्य में आदिवासी साहित्यकारों का योगदान - एक अवलोकन”, शोध प्रभा, श्री लाल बहादूर शास्त्री विद्यापीठ ISSN ०९७४-८९४६ Vol. २ No. १: २०२४ पृ. ८७
5. लोहकरे संजय (संपादक): ' रणपाखरांची गाणी ' अक्षता प्रकाशन ,३३५, शनिवार पेठ ,श्रीपाल प्लाजा ,बी -१९,पुणे-४११०३० , २०२३, ,पृ। १३०, ISBN : ९७८-८१-९४६५९६-३-१
6. लोहकरे संजय: महाराष्ट्र के आदिवासी कोली महादेव जनजाति के साहित्य का चिकित्सक अभ्यास। पीएचडी थीसिस, पुणे विश्वविद्यालय, २००६
7. क्षीरसागर मनोज, भारतीय जमती , काल , आज अणि उदया - वर्मा , आर। सी। अनुवाद , प्रकाशन विभाग माहिती अणि प्रसारण विभाग भारत सरकार, २००३,
8. रुक्मिणी धराड़े और गंगूबाई धिंदले (मु। पो। धामणवन , तहसिल - अकोले , जिला। - अहमदनगर) संकलन तारीख : नवम्बर २०२३
9. खोकले कमलाबाई: मु. पचपट्टा वाड़ी पो. तिरडे, तहसिल अकोले, जि। अहमदनगर, तारीख : मे, २०२२